बुलेटिन

जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल

जी.बी.एच. आरोग्यम्

राजधानी के बाहर राजस्थान का एकमात्र NABH प्रमाणित हॉस्पीटल

वर्ष – 4 । अंक 15–16 फरवरी – 2015

आईये मिल कर कैंसर को हरायें।

शरीर से तीन फिट सरिया निकालने में कामियाब रहे, जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल के डॉक्टर

4 घण्टे जिन्दगी और मौत के बीच झुंझता रहा युवक।

एक युवक निर्माणाधीन चेतक कॉम्पलेक्स बांसवाडा की लिफ्ट की खाली कॉलम में गिर गया। दीवार से रगड़ता हुआ नीचे जमीन पर आ गिरा। जमीन पर लिफ्ट के कॉलम के लिए पहले से सरिए गाढ़ रखे थे। करीब 40 फिट से ज्यादा उंचाई से गिरने पर युवक के बाई जांघ से शरीर में 3 फिट लम्बा व सवा इंच मोटा एक सरिया गुस गया। जो शरीर के पीछे के हिस्से को चीरता हुआ ऊपर निकल गया था। रात को 8 बजे घटनास्थल पर स्थित युवक के साथियों व वहां निर्माणरत लोगों ने मिलकर जमीन से लगे सरियें को आरी से काटा तथा तुरंत एम्बुलेंस को फोन कर 4 घण्टे में उदयपुर स्थित जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल पहुँचे। रात 12:00 बजे युवक का गंभीर हालत में 5 घण्टे के ऑपरेशन कर सरिया निकाला गया।

ऐसे गुसा - खीचकर निकालना सम्भव नही था।

जांगो से होते हुए पेट (रेक्टम) के अन्दर चिरते हुए रीढ़ की हड्डी (सेक्रम) को तोड कर आगे निकल गया। सरिया बाये हाथ की हड्डी के पीछे की तरफ आ कर रूक गया। घुसते हुए सरिया धनुष की तरह मुडकर पीठ की तरफ मुड गया था। जिसे सीधा खींचकर निकालने से मरीज की जान को खतरा हो सकता था।

ऑपरेशन प्रक्रिया

रोड़ मुडी हुई थी तो सीधा नही निकाला जा सकता था। इसके लिए जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल ट्रोमा टीम द्वारा दो स्टेज में इसे 5 घण्टे ऑपरेशन कर अन्जाम दिया।

प्रथम स्टेज – सबसे पहले रोड़ को दो हिस्सो में काटा गया। पीठ (उपर) वाले हिस्से में रीढ़ की हड्डी की तरफ ऑपरेशन कर रोड को काटा गया। उपर वाला हिस्सा अलग होने से अन्य अंगो को नुकसान पहुचाये बिना निकाला जा सका।

दुसरी स्टेज – नीचे वाला सरिये का हिस्सा पेट (रेक्टम) के आर–पार था। जिसे धीरे–धीरे पेट के एक भाग से निकाला गया। रक्त स्राव को रोका गया। पेट के दुसरे हिस्से से रोड को निकाला गया। ऑपरेशन के बाद पुनः डायमेज अंगों की सफाई कर जोडा गया।

तीसरी स्टेज – स्पाइनल कोड का ड्यूरा चोट के कारण S1, S2 लेवल पर फट गया था तथा इससे CFF नामक फ्लूड लिक हो रहा था जो की आईसीयू में एमआरआई कर पता लग सका उस ड्यूरा को खोल कर पुनः रिपेयर किया गया। कुछ दिनों में युवक को स्वस्थ हालत में डिस्चार्ज किया गया।

पिछले 8 वर्षो से जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में कई गंभीर रोगियों को गहन चिकित्सा उपलब्ध करवा कर जीवन दान दिया है। सामान्य एवं गंभीर दुर्घटनाओं के लिए यहां विशेषज्ञ डॉक्टर की ट्रोमा टीम द्वारा मरिज को समय पर इलाज की सुविधा सुलभ करवायी गई हैं। 24 घण्टे त्वरित आपातकालीन चिकित्सकीय सेवाएं एवं चिकित्सको द्वारा निष्ठापुर्वक सेवाओं के कारण गुजरात व मध्यप्रदेश से भी अच्छी सेवाएं दे पाये हैं। जीबीएच अमेरिकन की ट्रोमा टीम के डॉ. निलेश पाटील, डॉ. मनीश शर्मा, डॉ. पियुष गर्ग एवं डॉ नरेन्द्र मल (न्यूरो एण्ड स्पाईन सर्जन) द्वारा ऑपरेशन की प्रक्रिया कर युवक का जीवन बचाया जा सका।

- जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल दक्षिण राजस्थान में कैंसर रोग निवारण हेतु पहला 300 शैय्याओं सहित पूर्णतया समर्पित कैंसर हॉस्पीटल है।
- यह अस्पताल अमेरिका स्थित सुप्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. कीर्ति कुमार जैन के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में स्थापित किया गया है।
- कैंसर मरीज की बीमारी की विस्तृत चर्चा हेतु ट्यूमर बोर्ड संचालित एवं वीडियों कान्फ्रेंसिंग द्वारा अमेरिका के कैंसर रोग विशेषज्ञों के साथ परामर्श सुविधा यहां पर उपलब्ध है।
- न्यूनतम दरों पर कैंसर रोग के उपचार की सुविधा सुलभ है।

कैंसर रोग का उपचार

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल दक्षिण राजस्थान का सर्वप्रथम सम्पूर्ण कैंसर हॉस्पीटल हैं। जहां कैंसर का इलाज तीन प्रक्रियाओं द्वारा किया जाता है।

मरीज के लक्षणों और कैंसर की स्टेज के आधार पर कीमोथैरेपी, सर्जरी, और रेडियेशनथैरेपी की जाती है।

कैंसर की शुरूआती अवस्था में उपचार के लिए सर्जरी की जाती हैं

कीमाथैरेपी में दवाओं और नई टारगेट मॉलिक्यूलर व बायोलॉजीकल दवाओं से उपचार किया जाता है।

रेडियेशनथैरेपी में विकिरण से कैंसर कोशिकाओं को नष्ट किया जाता है।

अधिकांशतया रोगी यह जानना चाहते हैं कि कैंसर किस अवस्था पर हैं हालॉकि यह बहुत आसान सवाल नहीं है। फिर भी प्रायः गांठ कितनी बड़ी है। एवं उसका असर शरीर के दूसरे भाग में कितना हैं, उसके अनुसार अवस्था निर्धारित होती है। यदि गांठ के अलावा भी अन्य स्थान पर गांठ हो जाती हैं तो यह अवस्था बढ़ जाती हैं अवस्था के अनुसार रोगी का उपचार किया जाना महत्वपूर्ण है।

कैंसर सर्जरी

शल्य चिकित्सा कैंसर का सबसे उत्तम उपचार हैं सर्जरी द्वारा कैंसर ग्रसित भाग को शरीर से निकाल देते है। शल्य चिकित्सा में या तो पूरे कैंसर ग्रसित भाग को निकाला जाता हैं या गांठ वाले भाग को हटाकर किरणों से (रेडियेशन थेरेपी) उपचार किया जाता हैं। ताकि बची हुई कैंसर कोशिकाओं को नष्ट किया जा सकें। कैसर की गाठें असामान्य कोशिकाओं से बनती है, एवं निरन्तर विभाजित होती रहती है। यह अपने स्थान के आसपास फैलती हैं, यदि प्रारम्भिक अवस्था में इसका उपचार नहीं होता है तो यह शरीर के अन्य भागों में फैल जाती हैं। कैंसर की इस अवस्था को मेटास्टेसिस **(Metastasis)** कहते हैं।

जिसमें प्रारम्भिक गांठ रक्त वाहिनियों एवं लासिका वाहिनियों द्वारा शरीर के दूसरे भागों जैसे–यकृत, फैफड़े, हड्डी आदि में गांठ बना लेती है। **(Secondary Tumor or meastasis)**

कैंसर का इलाज समय पर

केस - 1

नाम : श्रीमती इन्दु कुमारी । उम्र : 21 वर्ष । पति का नाम : नवनीत रंजन
निवासी : सिरोही (राजस्थान)

दिनांक 16, सितम्बर, 2014 को अचानक से पेट में असहनीय दर्द उठा जिसके चलते सिरोही में निजी चिकित्सक को दिखाया गया। उन्होंने सोनोग्राफी करवाई और पित्ताशय में स्टोन होने की बात की।

पति नवनीत रंजन द्वारा श्रीमती इन्दु कुमारी को जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल में ऑपरेशन के लिये लाया गया। यहाँ पर सोनोग्राफी के साथ–साथ सी.टी. स्केन किया गया तो पित्ताशय में स्टोन के साथ–साथ गांठ का होना भी पाया गया। जिसमें कैंसर सम्भावित लक्षण भी पाये गये । अस्पताल के डॉ. कुरेश बम्बोरा (ऑन्कोसर्जन) द्वारा रेडिकल कोलेकसीस्टेकटोमी प्रक्रिया द्वारा कैंसर गांठ को निकाला।

यह खतरा हो सकता हैं। यदि पित्ताशय गांठ को एक सामान्य प्रक्रिया अपनाकर ऑपरेट किया जाता तब कैंसर कुछ समय बाद रोगी के लिये घातक हो सकता था और रोगी की 2-3 माह में मृत्यु भी हो सकती थी। इस प्रकार से श्रीमती इन्दु कुमारी जिनकी आठ माह की दूधमुही बच्ची है कुछ समय बाद बिन माँ की भी हो सकती थी और जिसका लालन–पालन उसके पिता के लिये भारी पड़ सकता था। सामान्यतः पित्ताशय में कैंसर की गांठ होने के बहुत ही कम केस पाये जाते हैं (0-3 से 3 प्रतिशत) और उसको भी प्रथम अवस्था में ही पता लगा लेना और रोगी को इससे निजात दिला देना चिकित्सा के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा योगदान है।

डॉ. कुरेश बम्बोरा
सीनियर कन्सलटेन्ट ऑन्कोसर्जन
जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल

केस - 2 निकाली तीन किलो की गांठ

श्री धीरज लाल कटारा पुत्र श्री कोदर लाल कटारा, निवासी डुँगरपुर काफी समय से अपने पेट में गांठ होने की वजह से परेशान थे और इसके चलते उन्होंने मुम्बई, अहमदाबाद जैसे बड़े महानगरों के कई प्रसिद्ध चिकित्सको से इस गांठ को शरीर से निकालने के लिये सलाह मशवरा किया लेकिन सभी जगह से निराशा हाथ लगी। उनका कहना था कि यह गांठ काफी बड़ी हैं और शरीर के अन्य अंगो जैसे लीवर, किडनी के सम्पर्क में है। और यदि इसको ऑपरेट कर बाहर निकाल गया तो शरीर के बाकी अंगों को नुकसान पहुँच सकता है। काफी हताश होने के बाद अन्त में उदयपुर के जीबीएच मेमोरियल कैंसर अस्पताल के डॉ. कुरेश बम्बोरा कैंसर सर्जन से परामर्श कर उनका इलाज शुरू किया। दिनांक 07 नवम्बर, 2014 को श्री धीरज कटारा की सफल सर्जरी की गई और उनके पेट से 3 किलो वजन की गांठ निकाली गई जिसको निकालने के लिये कोई भी चिकित्सक तैयार नहीं था। श्री कटारा की हालत में निरन्तर सुधार हो रहा है। श्री कटारा कहना है कि डॉ. कुरेश जैसे उनके लिये भगवान बनकर आये और उनको एक नया जीवन दान दिया।

स्तन कैंसर
मेडिकल इमरजेंसी नही!

सकारात्मक सोच से मिला नया जीवन

मुझे पता चला कि मेरे ब्रेस्ट में छोटी सी गांठ हैं। जांचे करवाई तो कैंसर होने की बात सामने आई। एक पल के लिए सभी सन्न रह गए लेकिन सकारात्मक सोच से कैंसर जैसी बीमारी से उपर पाई। कई सर्जरी हुई फिर कीमो थैरेपी आदि हुए। दूसरी गांठ का ऑपरेशन हुआ जिसका ऑपरेशन जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल के कराया। अब हर दो माह में चैकअप के लिए जाती हूं। मै दूसरों को भी यही कहती हूं। कभी खुद को बीमार नहीं समझे। कैंसर से हारे नही हराये, समय पर इलाज लें।

कोशल्या देवी गृहिणी

अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर शोध एजेन्सी 2004 के अनुसार प्रति वर्ष 10 से 11 लाख लोग कैंसर से पीड़ित होते हैं एवं 6 से 9 लाख लोगों की मृत्यु कैंसर से होती है, इन आंकड़ो में से अधिकांश (50 प्रतिशत रोगी विकासशील देशों से होते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2020 तक यह गणना 10 प्रतिशत बढ़ जाएगी और विकासशील देशों में कैंसर के रोगी 60 प्रतिशत होने की संभावना हैं।

कैंसर रोगी हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहे!

यह जानना आवश्यक हैं कि स्तन में गाठ कैंसर है या सामान्य। यद्यपि यह गंभीर रोग है, किन्तु यह कोई मेडिकल इमर्जेन्सी नही हैं। अधिकांश स्तन कैंसर की गांठे बनने एवं बढ़ने में कई महीने या कई वर्ष लगते हैं।

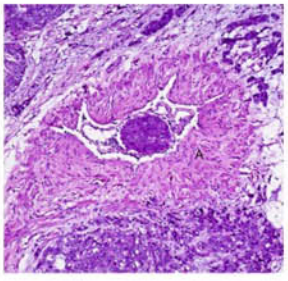

स्तन कैंसर क्या होता हैं?

स्तनो में असामान्य कोशिकाएं एकत्रित होकर गांठ का रूप ले लेती हैं। प्रारम्भिक अवस्था में दूध की नलियों से आरम्भ होकर आस–पास के भाग को प्रभावित करता हैं इस प्रक्रिया को हम स्टेज या अवस्था में विभाजित करते है। मेडिकल साइंस में कैंसर को चार अवस्थाओं में विभाजित कर ईलाज की प्रक्रिया अपनाई जाती है।

जाँचे : यदि किसी गांठ का पता चलता है तो मैमोग्राम या अल्ट्रासाउंड कराया जाता है। यह जांचने के लिए एक बायोप्सी की जाती है कि क्या वह गांठ कैंसर वाली है और यदि ऐसा है, तो किस प्रकार का कैंसर है और किस अवस्था में है।

महिलाएं जिनमें स्तन कैंसर की संभावना अधिक रहती है।

अधिक उम्र में विवाह, जो गर्भवती नही हुई हो, जिनके परिवार में किसी रिश्तेदार को कैंसर हुआ हो, 30 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं में व लम्बे समय तक हॉर्मोन का सेवन और स्तन पान न करा पाना।

कैंसर के इलाज के लिए दूर क्यों जाए?

कुछ दिन से स्तन में दर्द होने लगा। पहले गांठों जैसा महसुस हुआ था। लेकिन कैंसर की जानकारी के अभाव में ध्यान नही दिया। जब यह दर्द कुछ बढ़ने लगा तो परिजनों के साथ जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल में डॉक्टर गरिमा मेहता को दिखाया। पता चला की इन्हे स्तन कैंसर है। जिससे परिजनों को थोडा असहज महसुस हुआ। डॉक्टर की कैंसर टीम ने जॉच कर परिजनों से बात की जल्दी से ट्रीटमेन्ट की सलाह दी।

दुर क्यों जाए।

परिजन दामाद श्री पुष्कर जी जाट ने बताया की "अहमदाबाद और अन्य जगह जाने का भी सोचा था लेकिन कैंसर का पूरा ट्रीटमेन्ट (सर्जरी, किमो थेरेपी, रेडियेशन थेरेपी) यही होने का पता चला इसलिए नही गये।" ग्रामीण परिवेश होने से जानकारी कम थी लेकीन जीबीएच में पहली बार कीमों थेरेपी होने के बाद कैंसर का डर ही खत्म हो गया। उदयपुर में विश्वस्तरिय सुविधाएं होने से हमें बहुत फायदा हुआ। बडे शहरों में मिलने वाली विश्वस्तरिय सुविधाएं यहां पर हैं। हमारी यहां दुसरी किमो–थेरेपी अगले माह में होगी। ओर अब हम काफी आराम महसुस कर रहे है। जैसा की चुन्नी देवी के दामाद पुश्कर जी ने बताया।

कैंसर रोगियों को संदेश

डॉ. गरिमा मेहता
सीनियर कन्सलटेन्ट सर्जन ब्रेस्ट कैंसर विशेषज्ञ
जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल

कैंसर की इस लड़ाई में आपकी विजय के लिये हम आपके साथ है। कैंसर से लड़े, डरे नहीं।

- ☑ जो चुनौती आपके समक्ष हैं उसे स्वीकार करें एवं उसका सामना करने के लिये स्वयं को तैयार करें। अपने मस्तिष्क में उभरे प्रश्नो का उत्तर जानने का प्रयास करें।
- ☑ रोग के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाए एवं सोच समझकर अपने उपचार का चुनाव करें।
- ☑ रोग के बारे में अज्ञान व्यक्तियों की सलाह एवं उपचार को हर सम्भव अनसुना करें।
- ☑ प्रारम्भिक कुछ महीने आपको कठिन परिस्थिति का सामना करना हैं, एवं उपचार के समय जो परेशानियां आयेगी उनका सामना कर आगे बढ़ना है। कैंसर रोग संक्रमित नहीं होता हैं, अतः इन रोगियों के साथ रहने में किसी प्रकार की आशंका ना रखें।
- ☑ कैंसर के साथ एवं कैंसर के बाद सामान्य जीवन जीने का संकल्प लें।

ब्रेस्ट कैंसर से जुड़ी भ्रांतिया और उनकी सच्चाई।

ब्रेस्ट कैंसर से जुड़ी कई भ्रांतिया भी हैं जैसे स्तनों में सभी गांठे ब्रेस्ट कैंसर हैं, अनुवांशिक रोग हैं, स्तनपान से खतरा बढता है। ब्रेस्ट कैंसर को रोका नही जा सकता। यह अज्ञात रोग है। लेकिन कुछ लक्षण व जांचों से पता लगाया जा सकता हैं साथ ही 80 प्रतिशत स्तनों में गांठे कैसर की नही होती। ब्रेस्ट कैंसर परिवार में किसी को है तो खतरा अधिक होता हैं यानि होने के आसार अधिक होते है। और स्तनपान से कैंसर बढ़ता नही हैं घटता है। समय पर इलाज से ब्रेस्ट कैंसर से बचा जा सकता हैं। ब्रेस्ट कैंसर का इलाज अवस्था के अनुसार किमो थेरेपी, सर्जरी एवं रेडियेशन थेरेपी से किया जा सकता है।

लिम्फिडीमा (Lymphedema)

स्तन कैंसर के ऑपरेशन के कुछ समय बाद हाथों में सूजन आ सकती है। जिसे हम लिम्फिडीमा कहते हैं। अधिकतर यह हल्की सूजन रोगी को परेशान नही करती किन्तु कभी कभी यह बढ़त अधिक हो जाती हैं एवं इसका उपचार आवश्यक हैं।

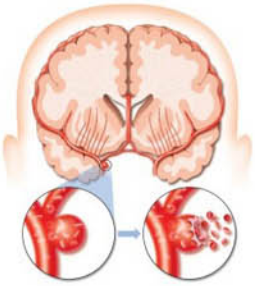

बुढ़ापे में स्ट्रोक (लकवा) मृत्यु का तीसरा बड़ा कारण

उम्र के बढ़ने के साथ–साथ मनुष्य के शरीर में कई तरह के परिवर्तन होते रहते हैं ये परिवर्तन सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तरह के होते हैं। सकारात्मक परिवर्तनों की संख्या न्यून होती हैं जबकि वृद्धावस्था की वृद्धि के साथ–साथ नकारात्मक परिवर्तनों की संख्या में भी लगातार वृद्धि होती रहती हैं ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, उदर रोग, किड़नी व लीवर के रोग, खून की कमी, दमा, निमोनिया, पीलिया, टाईफाईड आंखों के रोग, दंत रोग, घुटनों के रोग, थाईराईड, विटामिन बी की कमी, चर्मरोग, हर्निया, अपेन्डिक्स, मूत्ररोग–प्रोस्टेड, पथरी महिलाओं व बालकों के रोग आदि ऐसे कई रोग हैं जिनसे पुरूश व महिला कभी–कभी ग्रसित होते रहते हैं इन विशिष्ट रोगों के साथ–साथ मौसमी बीमारियां यथा मलेरिया, डेंगू, स्वाईन फ्लू, हेजा आदि का भी समय–समय पर अपना प्रभाव बताते रहते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि ये रोग हर व्यक्ति को हो। लेकिन कुछ रोग ऐसे हैं, जिनसे अधिकांश व्यक्ति प्रभावित होते रहते हैं इनमें हार्ट अटेक, कैंसर व स्ट्रोक (लकवा) प्रमुख हैं इन तीनों में स्ट्रोक या लकवा मनुश्य की मृत्यु का तीसरा बड़ा कारण हैं। WHO की रिर्पोट के अनुसार स्ट्रोक (लकवा) से प्रतिवर्श भारत में 545 प्रतिलाख लोग प्रभावित होते हैं एवं एक तिहाई लोग अपंगता के शिकार हो जाते है। वर्तमान में यह रोग लगातार बढ़ रहा हैं। कभी–कभी बच्चों व युवाओं में भी यह रोग पाया जाता हैं किन्तु इस रोग से वृद्ध व्यक्ति सर्वाधिक ग्रसित होते हैं। स्ट्रोक या लकवे से ग्रसित होने के कई कारण है, कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार है।

बढ़ रहा है स्वाइन फ्लू का खतरा

क्या करें? : छींकते और खांसते वक्त अपने मुँह और नाक को कपड़े से अवश्य ढकें। संक्रमित लोगों से एक हाथ से अधिक की दूरी पर रहें। स्वाइन फ्लू होने पर सार्वजनिक जगहों पर सावधान रहें। खूब पानी पीयें और पौष्टिक आहार लें। भरपूर नींद लें।

क्या न करें? : नाक, आंख या मुँह को न छुएं। डॉक्टर के परामर्श के बिना दवाई न लें। हाथ न मिलाएं, गले न लगें या दैहिक संपर्क में आने वाले अन्य अभिवादन न करें। सार्वजनिक जगहों पर सावधान रहें।

उदयपुर निवासी लोकेश कुमार जैन (बदला हुआ नाम) उम्र 56 वर्ष, 2007 में हदय संबंधित बिमारी का इलाज कराया था। कुछ दिन पूर्व शाम 6 बजे अचानक सड़क पर गिर गये तथा बोलने में समस्या के साथ दाहिने हाथ, पैर और चहरे में कमजोरी महसुस हुई। मरीज को किसी भी प्रकार की न्युरोलॉजिकल या ताण जैसी कोई समस्या पहले नहीं थी, ना ही मरीज ब्लड प्रेशर, डायबिटिज, टी.बी. या किसी अन्य बीमारी से ग्रसित था। मरीज के परिजन अपनी सुझबुझ से तुरंत करीबी हॉस्पीटल की इमरजेन्सी में ले आये। जहां पर न्युरोसर्जन को दिखाया गया उन्होने मरीज की MRI जांच कराई MRI में मरीज के मस्तिष्क के लेफ्ट एम.सी.ए. टेरिट्री में रक्त का थक्का पाया गया। न्युरोसर्जन एवं मरीज के परिजन मरीज को जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल की इमरजेन्सी में लाये। जहां डॉ. अतुलाभ वायपेयी द्वारा मरीज का स्ट्रोक होने के 6 घंटे से कम समय में इलाज शुरू हो सका। डॉ.अतुलाभ वायपेयी ने मरीज के मस्तिष्क की एंजियोग्राफी (DSA-Digital Substraction Angiography) कर मेकेनिकल थर्म्रोबेक्टोमी प्रोसेस करा जिसके अन्तर्गत सोलिटियर डिवाइस के माध्यम से रक्त के थक्के को मस्तिष्क की धमनी से बाहर निकाला गया। लोकेश कुमार जैन आज की तारीख में अपने आप में लगभग पूर्णतया स्वस्थ महसुस कर रहे है। डॉ. अतुलाभ श्री लोकेश कुमार जैन के अच्छे इलाज के लिए उनके परिवार जन को ही जिम्मेदार बताते है क्योंकि उनके परिवारजन द्वारा स्ट्रोक होने के 6 घंटे के भीतर वे हॉस्पीटल लेकर आ गये। इसी कारण लोकेश कुमार जैन की स्ट्रोक जैसी बिमारी से जल्दी रिकवरी हो पा रही है। स्ट्रोक का इलाज प्रारम्भिक 6 से 8 घंटे के भीतर करे जाने पर मरीज की स्ट्रोक से रिकवरी जल्दी हो पाती है। स्ट्रोक के इलाज मे प्रारम्भिक 6 से 8 घंटे काफी महत्वपूर्ण होते है।

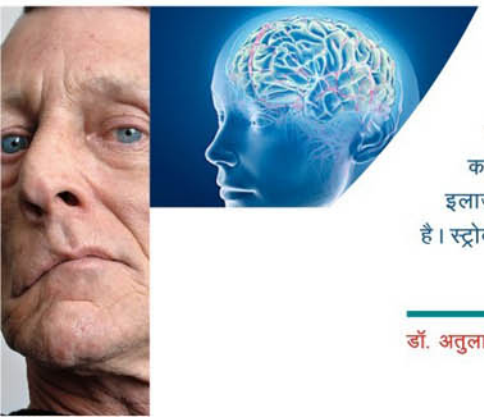

डॉ. अतुलाभ वाजपेयी, कन्सल्टेंट इन्टरवेन्शनल न्यूरोलोजिस्ट, जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल–उदयपुर।

जानलेवा नहीं हैं परन्तु पीड़ित के जीवन को विकलांग करने की क्षमता रखता है गठिया ।

जोड़ों की बीमारियों जिन्हें गठिया कहा जाता हैं। अन्य बीमारियों जैसे ह्रदय रोग, मधुमेह, कैंसर व एड्स आदि के मुकाबले गठिया रोगों की जागरूकता सामान्य लोगों मे काफी कम देखने को मिलती हैं यह रोग अन्य रोगों की तरह जानलेवा नहीं हैं परन्तु पीड़ित मरीज के जीवन को विकलांग करने की क्षमता रखता है। गठिया कई प्रकार का होता है, जैसे रोमेटाइड आर्थराइटिस, ओस्टियो आर्थराइटिस, गाउट इत्यादि। यह विभिन्न प्रकार के गठिया हैं जो अलग–अलग जोड़ों को प्रभावित करते हैं। इनके मुख्य लक्षण जोड़ों में दर्द होना, सूजन, सुबह–सुबह होने वाली अकड़न, जोड़ों का टेड़ापन व विकृति, चलने–फिरने में असमर्थता है।

रामचरण जी नीमच मध्यप्रदेश निवासी है। पेशे से अध्यापक हैं जो उम्र के साथ मुझे जोड़ो के असहनिय दर्द से परेशान थें। तब कई प्रकार की पेन किलर दवाईयों लेते रहे लेकिन जब दवाई का असर कम हो जाता तो दर्द वापस होने लगता। उठने, बैठने चलने फिरने में परेशानी होने लगी। ये जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल से प्रत्यारोपण के लिए परामर्श के लिए आये। काफी सकारात्मक सोच के साथ अत्याधुनिक चिकित्सा पद्धति में घुटना प्रत्यारोपण को समझा और प्रत्यारोपण का निर्णय लिया। इसी तरह महिलाएं में भी जेडंर नि इंप्लाट कि उपलब्ध हैं जिसे सफलता पुर्वक कर रहे है। प्रत्यारोपण के बाद कुछ दिनों में ही चलने फिरने लगें कई लोगो ने प्रत्यारोपण के विकल्प को अपनाया है। अब सामान्य व्यक्ति की तरह कार्यकलाप कर रहे है।

प्रत्यारोपण अन्तिम हथियार : जब गठिया की वजह से घुटने या कूल्हें पूरी तरह से खराब हो जाते हैं तो उन्हें शल्य चिकित्सा द्वारा बदलना ही एकमात्र सफल विकल्प रह जाता हैं। इसमें जोडों की खराब सतह को बदलकर कृत्रिम इम्पलांट लगाया जाता है। चूंकि महिलाओं में गठिया का प्रतिशत 5 गुना ज्यादा होता हैं उनमें जोड़ प्रत्यारोपण की जरूरत भी ज्यादा होती हैं। महिला एवं पुरूषों के घुटनों की बनावट एवं संरचना अलग –अलग होती हैं अब तक महिलाओं एवं पुरूषों में एक ही प्रकार का जोड़ प्रत्यारोपण किया जाता था। कई बार भारतीय महिलाओं में, विशेषकर छोटे कद की होती है। उनमें ऑपरेशन के पश्चात् परेशानी उत्पन्न होती थी। अब नई तकनीक द्वारा महिलाओं के लिए विशेष जोड़ जेंडर नी का इस्तेमाल होने लगा हैं। जेंडर नी के पश्चात् महिलाएं घुटना मोडकर, पालती लगाकर बैठ सकती है। गठिया का इलाज उसी अस्पताल में लेना चाहिए जहां कम से कम सक्रमण हो, उच्च स्तर का ऑपरेशन थियेटर हो (लेमीनर प्लो), विशेषज्ञ चिकित्सक हो। जिससे मानवीय समस्याओं को दूर करने में मदद मीलेगी। जेंडर नी रिप्लेसमेन्ट 15 साल के लिए किया जाता है। इसके बाद जॉच कर इसे बदला जा सकता हैं लेकिन किसी अवस्था में यह अधिक समय भी चल सकता है।

डॉ. मनीष अग्रवाल, जोइन्ट रिप्लेसमेन्ट सर्जन, जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल

ये तीनों बातें सुलभ हो उपचार उसी अस्पताल में ही उपचार

किसी भी बीमारी के उचित एवं सही ईलाज के लिये तीन बातें आवश्यक हैं – अनुभवी व योग्य चिकित्सक, आधुनिक संसाधनों से युक्त अस्पताल तथा कम खर्च में ईलाज। जहां पर ये तीनों बातें सुलभ हो उस अस्पताल में ईलाज बहुत ही आसानी के साथ संभव हो पाता हैं। इस दृष्टि से अत्याधुनिक संसाधनों से युक्त जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल, उदयपुर दक्षिणी राजस्थान का एकमात्र ऐसा अस्पताल हैं, जनरल सर्जरी एवं सर्जीकल के रोगी को अधिक केयर युनिट अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध है। जिसमें रोगी को साफ सुथरा हॉस्पीटल, स्टेंडर्ड ऑपरेशन थियेटर। जिससे रोगी को जल्दी ठीक होने में सहायक हैं एवं कम समय अस्पताल में रूकना पड़ता है। जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल **NABH** प्रमाणित हैं। यह प्रमाण पत्र रोगी, परिजन एवं हॉस्पीटल की सेवाओं में पारदर्शिता को दर्शाता हैं। जो कि हॉस्पीटलिटी के क्षैत्र में विश्वस्तरिय प्रमाणीकरण हैं। यह प्रमाण पत्र/मानक उदयपुर में एक मात्र जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल को प्राप्त हैं। पिछले 8 वर्षों में यहां आने वाले हर वर्ग की हर सम्भव मदद की जा रही है। इलाज के लिए किसी प्रकार की हिडन कॉस्ट नही ली जाती है। हॉस्पीटल राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। 1500 से अधिक ब्रेस्ट कैंसर के सफलतम ऑपरेशन (ट्रीटमेन्ट) एवं जनरल सर्जरी एवं सर्जीकल गैस्ट्रो एन्ट्ररोलोजी तथा जी.आई एन्डोस्कोपी पाइल्स–क्रायोसर्जरी जैसे कई असाध्य रोगो का सर्जीकल ऑपरेशन द्वारा ईलाज किया है। उत्तरी भारत में पिछले 35 वर्षो में 10500 से अधिक पाईल्स–क्रायोसर्जरी के सफलता पूर्वक ऑपरेशन कर अब डॉ. ए. एस. गुप्ता जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए कार्यरत रहे हैं। हॉस्पीटल में पूरी टीम में विशेषज्ञ डॉक्टर्स एडवान्स लेप्रोस्कॉपिक एवं कॉलोरेक्टल सर्जन है। जो पित्ताशय की पथरी, सभी प्रकार के हर्निया, हाईड्रोसील, बडी आंत व छोटी आंत की सभी प्रकार की सर्जरी दूरबीन से (बिना चीरे के), पेट के कैंसर की गांठे, पेट की टी. बी., आंत के सिकुडन की सर्जरी, बडे पाईल्स की सर्जरी विशेष स्टेपल सर्जरी की सुविधा उपलब्ध है।

''गेहुँ से एलर्जी किसी भी उम्र में संभव'' Celiac Disease

गेंहूँ से एलर्जी सामान्यतया एक से दो वर्ष के बच्चों में प्रकट होने वाली बीमारी हैं जब बच्चा पहली बार अन्न ग्रहण करता है। जिसमें गेंहूँ व जौ शामिल खाना आरम्भ करता है। इस रोग के मुख्य लक्षण बार–बार पतली दस्त लगना, शरीर का विकास न होना, पेट दर्द व पेट का फूलना, खून की कमी होना व बच्चे का चिड़ाचिडा होना है।

मनोहर सिंह जिनकी उम्र 50 वर्ष हैं उदयपुर के निवासी हैं और आरएसएमएम में कार्यरत हैं, पिछले एक वर्ष से दस्त की बीमारी से ग्रसित थे और पिछले एक वर्ष में कम से कम 10 डॉक्टर्स से चिकित्सकिय परामर्श ले चुके थे जिनमें दो बार अहमदाबद जाना भी शामिल हैं। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में गेस्ट्रोएन्ट्रोलोजी विभाग जांचों के दौरान पाया गया कि उन्हें गेंहू से एलर्जी है। इसी तरह श्रीमति प्रिती पोखरना, 27 वर्षीय महिला जो पिछले 3 माह से इस बीमारी से पीड़ित थी। उन्हें भी गेहूँ से एलर्जी की शिकायत सामने आयी। इसी प्रकार के कुछ अन्य मरीज भी 40 वर्ष व 60 वर्ष की उम्र में **Celiac disease** पाये गयें।

कुछ खून की जांचों व लक्षणों के आधार पर यह बीमारी पकड़ में आ सकती हैं और इसका ईलाज भी बहुत ही सामान्य हैं मरीज को आजीवन गेंहूँ व जौ से बनी वस्तुओं का उपयोग वर्जित करना पड़ता हैं। आश्चर्य की बात तो यह हैं कि पाश्चात्य देशों में जहां यह बीमारी बहुतायत में पायी जाती हैं वहां विशेष भोजन (**Glusten Free**) की व्यवस्था (**Exclusive Food Store**) एवं होटल की व्यवस्था ऐसे मरीजों के लिए है। एक बार रोग का निदान हो जाने पर एवं गेहूँ रहित भोजन (**GFD**) आरम्भ करने पर 3 माह में सभी कुछ सामान्य होने लगता हैं। कुछ महिला मरीजों में निःसंतानता व अनियमित माहवारी का सम्बंध भी **Celiac disease** से हो सकता है।

डॉ. पंकज गुप्ता : कंसलटेन्ट गेस्ट्रोएण्ट्रोलॉजीस्ट, जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल–उदयपुर।

ऑपरेशन लेप्रोस्कॉपी से तो कैची क्यू!

"बिना चीरे–टांके के दूरबीन द्वारा गर्भाशय गाँठ का ऑपरेशन"

आधुनिक चिकित्सा पद्धति व अनुसंधान के युग में लेप्रोस्कॉपी सर्जरी ने अपनी अलग पहचान बनाई है। जिससें पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में बदलाव आया हैं। जी. बी.एच अमेरिकन हॉस्पीटल में लेप्रास्कोपी के कुछ केस साझा कर रही हूँ। कुछ चुनौती पूर्ण मामलों के अलावा यह नया अनुसंधान भी हैं। जिससे महिलाओं के गर्भाशय / गर्भधारण से सम्बन्धित समस्याओं का निदान सम्भव हुआ हैं। इस चिकित्सा पद्धति से रोगियों को उपचार करने में मदद मिली हैं। अस्पताल में भी कम समय के लिए रूकना पड़ता है।

केस -1

रोगी की पांच साल पहले शादी हुई। पारिवारिक जीवन के चलते पांच साल बीत गये। निः सन्तानता से पीड़ित होने के कारण एक अन्य फर्टिलिटी सेन्टर पर इलाज लिया। दूसरी बार कृत्रिम गर्भधारण करवाया गया। लेकिन कृत्रिम गर्भ, गर्भाशय में न होकर गर्भ नली में गांठ बन गई। महिला की जांच में पाया गया की **2-3 X 3-00** सेमी की गाठ है। दवाईयों द्वारा उपचार के दौरान अण्डाशय एवं आंत के साथ खुन का थक्का जमा हो गया है। यह गांठ समय के साथ बढ़कर **8-9 X 9** सेमी हो गई थी। इसके पश्चात रोगी महिला को उस फर्टिलिटी सेन्टर पर बडा ऑपरेशन करना भी बताया गया। जिसमें अण्डाशय को निकालना बताया गया।

रोगी एवं परिजन परामर्श के लिए जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल आये। मरीज के अध्ययन एवं जॉच के बाद अल्ट्रा साउण्ड से पता चला की इसे एक्टोपिक प्रेगनेंसी हैं। अण्डाशय में बच्चा न बन कर नली में ही गांठ बन गई थी। जिसे बिना चीरा लगाये दूरबीन (लेप्रास्कोपी) द्वारा गांठ को निकाला गया। न ही महिला रोगी का कोई ऑपरेशन किया गया। न ही अण्डाशय निकालने की जरूरत पडी। मात्र दो दिन हॉस्पीटल में रूक कर प्रक्रिया को पूर्ण कर छुट्टी दे दी गई।

केस -2

महिला रोगी जिसकी उम्र **44** वर्ष हैं। पांच साल से महिला रोगी को बी.पी, (उच्च रक्तचाप) डायबिटिक था। जिसे दवाईयों द्वारा नियंत्रित किया गया था। एक अन्य अस्पताल में पूर्व में दो बार सर्जरी भी हो चुकी थी। एक साल से अति माहवारी से परेशान थी। रोगी की सोनोग्राफी जांच की गई। जिसमें महिला के गर्भाशय में **11.9 x 8.7 x 6.5** सेमी गाठ पाई गई। एक अन्य अस्पताल में ऑपरेशन होने की सलाह दी गई।

जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल में परामर्श के लिए आयी। रोगी की जॉचे की गई। पेप स्मीयर, बायोप्सी **(Biopsy)** जाचें सामान्य पाई गई। इसके बाद दूरबीन द्वारा रोगी की गांठ निकाली गई। इस प्रकार की प्रक्रिया मे अत्याधुनिक चिकित्सा तकनीक बाइपॉलर, हार्मोनिक, स्केलपल **(Scalpel)** उपयोग किया जाता है। लेप्रोस्कोपी ऑपरेशन में किसी भी प्रकार चीरा नही लगाया जाता। अब मरीज कम समय में ठीक होकर स्वस्थ हैं।

डॉ. आकाँक्षा त्रिपाठी
(स्त्री एवं प्रसूती रोग विशेषज्ञ)
जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल

डायबिटीज

डायबिटीज से अपनी जीवन शैली को प्रभावित न होने दें। डायाबिटीज के सही टाइप को समझना बहुत जरूरी।

★★★

डायबिटीज के कारण आपके जीवन का तकरीबन हर पहलू प्रभावित होता हैं यह जीवन–भर बनी रहने वाली एक गंभीर शारीरिक स्थिति है, लेकिन आप चाहें तो अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित बनाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं आप चाहें तो न केवल आज बल्कि जीवन भर अपने स्वास्थ्य की बागडोर अपने हाथो में रख सकते हैं।

स्वास्थ्य संबंधी ऐसी कई समस्याएं हैं जो डायबिटीज के कारण पैदा होती है, डायबिटीज के कारण आपके रक्त में ग्लुकोज का स्तर सामान्य से अधिक हो जाता हैं समय के साथ–साथ, धीरे–धीरे आपके शरीर के महत्वपूर्ण अंग जैसे ह्रदय, गुर्दे, स्नायु प्रणाली और आँखों पर भी विपरीत असर होने लगता है। अगर इसकी सही तरीके से देखभाल न की जाए तो इसके कारण तरह–तरह की जटिलताएं पैदा हो सकती है जैसे ह्रदय संबंधी बीमारी, गुर्दो का काम करना बंद कर देना, अंधापन यहाँ तक कि कभी–कभी पैर भी काटना पड़ सकता है।

इंस्सुलिन शरीर द्वारा तैयार किया जाने वाला एक ऐसा हार्मोन है जो हमारे द्वारा लिए गए भोजन को उर्जा में बदलने और कोशिकाओं को उर्जा

उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक हैं लेकिन डायबिटीज ग्रस्त व्यक्तियों का जीवन इतना आसान नही होता। इसका प्रमुख कारण है शरीर में आवश्यक मात्रा में इंस्युलिन जारी न कर पाना या फिर थोडा सा भी इंस्सुलिन जारी न करना।

डायबिटिज – टाईप **1**, टाईप **2**

डायबिटीज के सही टाइप को समझना बहुत जरूरी होता हैं, डायबिटीज मुख्य रूप से दो प्रकार का होता हैं टाइप **1** (जिसे पहले इन्सुलिन डिपेन्डेन्ट डायबिटीज मेलीटस, आईडीडीएम या जुवेनाइल ऑनसैट डायबिटीज कहा जाता था) डायबिटिज जीवनशैली रोग होने के कारण युवा अवस्था में भी पाया गया हैं। और टाइप **2** (पहले इसे नॉन–इन्सुलिन डिपेन्डेन्ट डायाबिटीज मेलीटस, एनआईडीडीएम या मैच्चोरिटी–ऑनसैट डायबिटीज कहा जाता था)

यदि आपका वजन सामान्य है और आपके रक्त में शक्कर के स्तर पर केवल भोजन और व्यायाम के द्वारा नियंत्रण नहीं रखा जा सकता तो हो सकता है आपका डॉक्टर आपको रक्त में ग्लुकोज का स्तर कम करने के लिए डायबिटीज रोधक दवा दें। डायबिटिज की प्रत्येक दवा अलग तरह से असर करती हैं और इसके विपरीत प्रभाव भी अलग होते हैं। यदि एक दवा से लाभ न हो तो हो सकता हैं आपका डाक्टर अलग–अलग दवाओं का मिला जुला उपचार दें। शुगर जांच से प्राप्त परिणाम के आधार पर आप अपने भोजन, व्यायाम या दवाओं/इन्सुलिन की मात्रा में परिवर्तन करके अपने रक्त में शक्कर का स्तर एक सही सीमा में नियंत्रित रखा जाता है। नियमित जांच से कोई भी गंभीर जटिलता पैदा होने से पहले आप अपने रक्त में शक्कर के अधिक और कम स्तर का पता लगाकर, योग्य उपाय अपना सकते है।

डॉ. जय चोरडिया : डायबिटिज, थायरोइड एवं हॉर्मोन विशेषज्ञ
जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल–उदयपुर।

डायबिटीज के रोगी अपने भोजन में रोजाना पौष्टिक पदार्थो को शामिल करें। रक्त में शक्कर पर नियंत्रण रखने के लिए एक सही आहार योजना बहुत जरूरी हैं इससे आप डायबिटीज की जटिलताओं को जोखिम कम कर सकते हैं खाद्य पदार्थो की अदला–बदली या कार्बोहायड्रेड की मात्रा पर आधारित एक व्यक्तिगत पोषक आहार योजना आपकी पोषण संबंधी जरूरत पूरी कर सकती है।

भोजन में शामिल खाद्य पदार्थो के संबंध में निरंतरता बनाए रखकर, इनके पोषण गुणों की जानकारी प्राप्त करे और खाने के समय का रिकार्ड रखकर आप अपने रक्त में शक्कर का स्तर सामान्य बनाए रख सकते है। नियमित भोजन करें। हर दिन अलग–अलग तरह का भोजन करें। रेशेदार पदार्थ अधिक खाएं। शक्कर या मीठे पदार्थ कम खाए। वसायुक्त पदार्थ कम खाएं। नमक कम खाएं। एल्कोहल का सेवन कम करें। स्वास्थ्य वर्धक आहार योजना बनाएं। अपने भोजन की मात्रा का निर्धारण करें। हर दिन समान मात्रा में भोजन करें। अपने भोजन के समय का डायबिटीज दवा या इंस्युलिन के साथ तालमेल बनाए रखें। डायबिटीज की देखभाल आपसे बेहतर कोई और नहीं कर सकता डायबिटिज संबंधी हर छोटी जानकारी आपके उपचार योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं वास्तव में डायबिटीज संबंधी जानकारी का मतलब हैं डायबिटीज के साथ किस तरह एक स्वस्थ और सामान्य जीवन जीयें। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर तुरन्त अस्पताल जाएं। उचित डाक्टर्स से परामर्श लें।

ढाई दशक से डायबिटिज की बीमारी से पीड़ित मेरे यहां आयी रोगी अपने स्वास्थ्य को लेकर इतनी सजग है की वो छिलके वाली हर दाल तौलकर पकाती थी। 20-25 साल से दाल और उबली हुई लॉकी ही उनका भोजन है। यह सही भी हैं कि डायबिटिज के मरीज को खान–पान की विशेष सलाह दी जाती है। साथ ही डायटिस्ट का भी विशेष रोल होता है।

मधुमेह एक ऐसा रोग है, जिसमें आपका शरीर उस भोजन का समुचित रूप से उपयोग नही कर पाता, जिसे आप ऊर्जा प्राप्त करने के लिए खाते हैं। कोषाणुओं को जीवित रहने तथा विकसित होने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। जब आप भोजन करते हैं तब यह ऊर्जा के एक रूप में विखंडित हो जाता है, जिसे ग्लूकोज़ कहते है। ग्लूकोज़ शर्करा का ही दूसरा नाम है। ग्लूकोज़ आपके रक्त में जाता है और आपकी रक्त शर्करा बढ़ जाती है। इंसुलिन एक ऐसा हार्मोन है जो आपके अग्नाशय (पैन्क्रियाज़) में बनता है। यह ग्लूकोज़ को आपके रक्त से कोषाणुओ में पहुँचाने में सहायक होता है, जिससे आपका शरीर, इसका ऊर्जा हेतु उपयोग कर सके। लोग इंसुलिन के बिना जीवित नही रह सकते। आपकी देखभाल का लक्ष्य यही है कि आपका ग्लूकोज़ स्तर यथासंभव सामान्य के आसपास रहे।

आपकी देखभाल में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं :

- भोजन संबंधी योजना तैयार करना।
- ग्लूकोज़ स्तर की जाँच।
- आपका ग्लूकोज़ स्तर कब बहुत कम अथवा बहुत अधिक होता है, यह जानने के लिए, लक्षणों को पहचानना।
- व्यायाम करना।
- दवाएं–इंसुलिन अथवा दवाईयाँ लेना।
- अपने चिकित्सक के साथ, सभी परामर्श तय करना।
- मधुमेह कार्यशालाओं में भाग लेना।

डॉ. संदीप भटनागर : सीनियर कन्सल्टेन्ट फिजीशियन एवं डायबेटोलॉजीस्ट
जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल–उदयपुर।

क्या आप तम्बाकू का सेवन या धुम्रपान करते हैं? यदि हाँ तो मांगीलाल की कहानी से कुछ सीख लें।

श्री मांगीलाल (उम्र 55 वर्ष) उदयपुर के निकट खेडा गाँव का निवासी हैं। मांगीलाल को तम्बाकू का शौक था। वे लगभग 20 वर्षो से तम्बाकू सेवन कर रहा था।

लगभग 1 वर्ष पहले, मांगीलाल के मुँह मे छाले हुएँ, कुछ महीनों के भीतर मुँह खोलने में कष्ट होने लगा। समस्या समय के साथ बढती गई ओर अंततः मुँह का खुलना लगभग बन्द हो गया। खाने और बोलने जैसी क्रियाएँ जटिल हो गई। कष्ट बढता गया तो उदयपुर व जयपुर के सरकारी अस्पतालों में दिखाया। डॉक्टरों ने बताया कि मांगीलाल कैंसर से ग्रसित हो चुका हैं। कैंसर का उपचार पहले

उदयपुर तत्पश्चात् जयपुर से लिया गया जहाँ कैंसर की दवाइयों (किमोथेरेपी) द्वारा इलाज किया गया।

बीमारी से कुछ राहत मिली परन्तु कुछ समय बाद मुँह के कैंसर का विस्फोट हुआ। मांगीलाल के मुँह के भीतर बढ़ता हुआ ट्युमर गले को फाडता हुआ प्रकट हुआ। साथ ही बढते हुए ट्युमर ने मांगीलाल के जबड़ो को अन्दर से तोड दिया।

2 सप्ताह पहले मांगीलाल के परिवार ने अहमदाबाद के जी. सी.आर.आई.से प्रशिक्षित नाक, कान व गले के विशेषज्ञ एवं शल्य चिकित्सक डॉ. कनिष्क मेहता के बारे में पढा। अखबार से पता चला कि डॉ. कनिष्क उदयपुर के जी.बी.एच अस्पताल में कार्यरत है।

परिवार जन मांगीलाल को लेकर डॉ. कनिष्क के पास आए। डॉ. कनिष्क ने सी.टी. स्केन कराया जिसमें यह पता लगा कि बीमारी का विस्तार अभी जबडों तक ही सीमित हैं। डॉ. कनिष्क ने अपने सहयोगी विशेषज्ञो के साथ राय कर इस निर्णय पर पहुँचे कि वे मांगीलाल के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला पाएगें।

दिनांक 25 अगस्त को डॉ. कनिष्क मेहता ने मांगीलाल के मुँह ओर जबड़े का बडा ऑपरेशन कीया। आपरेशन में ट्युमर व प्रभावित हुए दाँये जबडे को पूर्णतया निकाला गया। साथ ही पेडीकल्प फ्लेप तकनीक द्वारा छाती कि चमडी एवं मांसपेशियों को लेकर मांगीलाल के चहरे को अपने सामान्य आकार पर लौटाया। लगभग पाँच दिन पश्चात मांगीलाल अस्पताल से स्वस्थ घर लौट गया। अब मांगीलाल साधारण रूप से भोजन खा सकता है। बोल सकता है। परिवार पर एक बोझ बनने के स्थान पर अपने साधारण जीवनशैली में लौट गया। एक रोग ग्रस्त मनुष्य न बनकर पुनः एक सम्मानित व्यवसायी की तरह जीने लगा।

ऑपरेशन के बाद मांगीलाल को रेडियेशन (किरणों) द्वारा व दवाईयों (किमोथेरेपी) द्वारा इलाज की आवश्यकता हैं जो जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल–उदयपुर में दी जा रही है।

अगर आप तम्बाकू, गुटखा, पान–सुपारी, धुम्रपान या मदिरा का सेवन करते है? क्या आपके मुँह मे कोई छाला अथवा गांठ हैं, जो काफी समय से ठीक नहीं हो रही हैं? यदि हाँ तो ये शुरूआत हो सकती है मुँह के कैंसर की। विलम्ब ना करें।

डॉ. कनिष्क मेहता – नाक-कान-गला रोग विशेषज्ञ
जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल

जी.बी.एच. अमेरिकन हेल्थ कार्ड धारकों के लिए विशिष्ट सुविधाएं

☑ परामर्श पर 25% छुट ☑ दवाईयों पर 7% छुट ☑ भर्ती होने पर 10% छुट*
☑ पेथोलॉजी की जांचो पर 25% छुट ☑ कार्ड शुल्क *500 रू. परिवार के 4 सदस्य ☑ वैधता 2 वर्ष तक

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करे : 0 96804-08050

संरक्षक: डॉ. कीर्ति के. जैन, सी.एम.डी.
प्रधान सम्पादक: डॉ. देव कोठारी, एम.डी.
सम्पादक मण्डल: डॉ. वल्लभ पारीख, सी.ई.ओ. एवं मेडिकल डायरेक्टर
सम्पादक मण्डल: डॉ. आनन्द झा, सी.ई.ओ. जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल
सह–सम्पादक: पुष्पेन्द्र डी. गामोट, पी.आर.ओ.
मुद्रक: स्टार एड मीडिया प्रा.लि., उदयपुर

प्रकाशक
जी.बी.एच.अमेरिकन हॉस्पीटल
101, कोठी, भट्ट जी की बाड़ी, उदयपुर, 313001 –राजस्थान

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल
एयरपोर्ट रोड़, ट्रांसपोर्ट नगर के पास, बेडवास, उदयपुर, 313001 –राजस्थान

सम्पर्क : +91 0294-305600, 2426000 | ट्रोमा हेल्पलाइन : 0 93523 04050 | कैंसर हेल्पलाइन : 0294-3060630